रिकॉर्डः– ओम नमो शिवाय.... ॐ पिताश्री 22/7/1965
ओम् शान्ति। बच्चों को रिफ्रेश होने लिए यह रिकॉर्ड भी काफी होते हैं। इसलिए ही बाप कहते हैं, और तो बहुत ही फर्नीचर आदि घर में लाया जाता है, तुम भी 5–7 रिकॉर्ड घर में रखो। भल बाल–बच्चे, पति आदि यह रिकॉर्ड सुने तो भी नशा चढ़ जावेगा। महिमा तो सारी एक बाप की है ना; परन्तु इस समय उनको कोई जानते नहीं। और तो मनुष्यों की ढेर महिमा करते रहते। फॉरेन से कोई आते हैं तो कितने आदमी उनका दर्शन करने जाते हैं और यह कितना गुप्त आते हैं, जिसको सिर्फ बच्चे ही जानते हैं। एक ही बाप है जो पतित दुनिया से पावन दुनिया में ले जाते हैं। पतित दुनिया है विषय सागर, पावन (दु)निया है खीर सागर। तो मीठे–2 बच्चे, यह भी तुम निश्चय करते हमको अब श्रीमत मिलती है। रूहानी (प)ण्डा (गीता) है। जिस्मानी पंडे तो ढेर हैं। तीर्थ भी ..... अनेक हैं। वास्तव में सच्चा तीर्थ है मुक्ति–जीवनमुक्ति। मुक्ति–जीवनमुक्ति को पाने लिए मनुष्य कितने यज्ञ–तप–तीर्थ आदि करते आए हैं; परन्तु वो सब हैं झूठे। तुम बच्चों की बुद्धि में यह ज्ञान रहना चाहिए, जिससे खुशी रहे। जन्म–जन्मांतर कितने तीर्थ किए हैं; परन्तु सच्चा तीर्थ एक ही है अथवा दो ही हैं और कराने वाला है बाप। वो समझते हैं यह यज्ञ–तप–तीर्थ आदि करने से भगवान आवेगा। अच्छा वह कहाँ ले जावेगा? ज़रूर अपने घर ले जावेगा। वास्तव में सच्चा–2 तीर्थ हैं सुखधाम–शांतिधाम। यह तुम बच्चों की बुद्धि में है। सच्चे–2 तीर्थ को याद करना यही है मनमनाभव, मद्या...। बच्चे जानते हैं हम सच्चे तीर्थ पर जा रहे हैं। बाप कहते हैं अपने घर को और राजाई को याद करो। स्वर्ग का रचयिता तो वह एक बाप ही है। उनको ही हेविनली गॉड फादर कहा जाता है। इसलिए पूछा जाता है हेविनली गॉड फादर से क्या संबंध है? अगर सिर्फ तुम पूछेंगे, गॉड फादर को पहचानते हो, तो झट कह देंगे– हाँ, वो तो सर्वव्यापी है। तो यह भी समझाने की युक्ति रची जाती है कि बच्चों को सहज हो। तकलीफ तो बहुत देखी है ना। आधा कल्प, 63 जन्म अथवा 64 जन्म समझो, तुम आसुरी मत पर चलते हो। पुरुषार्थ तो किया जाता है अच्छी प्रालब्ध पाने लिए; परन्तु तुम अब जानते हो हमारी चढ़ती कला हुई नहीं है, और ही गिरते गए हैं। कितने माथा मारते रहे हैं। भक्तिमार्ग में कितनी मेहनत की है, दर–2 भटकते हो। बाप जानते हैं बच्चों ने बहुत मेहनत की है, बहुत तकलीफ उठाई है। 63 जन्म बहुत धक्के खाए हैं। जैसे सन्यासी लोग कहते हैं इस दुनिया में कागविष्टा समान सुख है, वैसे तुमने जो इतनी मेहनत की थोड़ा सा अल्प काल का सुख मिला था। किसको सा० हुआ, थोड़ा सा सुख हुआ। अब तो बाप कहते हैं सेकण्ड में मुक्ति–जीवनमुक्ति लो। बाबा, हमने आधा कल्प धक्के खाए हैं। अब आप कहते हो सेकण्ड में वर्सा लो। बाप कहते हैं– हाँ बच्चे, तुमने बहुत ठोकरें खाई हैं। एकदम जंगल के हुरे में जाकर फँसे हो। हुरे में डाकू रहते हैं। इस जंगल में कैसे तुमको लूटने वाले डाकू मिलते हैं। पहले–2 आता है देह–अभिमान। उनके साथ फिर और कितने बड़े डाकू हैं। यह है आदि–मध्य–अंत दुख देने वाले नम्बरवन डाकू। यह कोई को पता नहीं है। तुम कहते हो यह बड़े ते बड़े डाकू हैं। मनुष्य कहते हैं यह डाका ..... ज़रूर चाहिए। बाप समझाते हैं इन डाकुओं ने तुम्हारा क्या हाल किया है। एक/दो को काम कटारी मारते हैं। कितना खर्चा करते हैं। डाका मारते–2 क्या हाल हो गया है। अब यह तो बेहद की बातें हैं ना। आज बच्चा जन्मा खुशी हुई, क(ल) मर जाता तो रोने लग पड़ते। दुनिया की हालत (देखो) क्या है! अब तुम जानते हो बाबा आया (हुआ) है। वो ही सद्गुरु हैं। वो गुरु लोग तो अनेक प्रकार के रास्ते बताते हैं। जप–तप, दान–पुण्य, तीर्थ आदि करने में कितना खर्चा होता है। यहाँ कुछ भी खर्चा नहीं। मम्मा ने क्या खर्चा किया। (बाप) कहते हैं सिर्फ माम् एकम् याद करो तो तुम्हारे सिर पर जो पापों का बोझा है वह उतर जाए। यह नई सगाई है ना। कन्या की सगाई होती है ना। उसको क्या पता किससे सगाई होगी। यह भी ऐसे ही है। कहते हैं एक दिन भगवान साजन आएगा ज़रूर; परन्तु जानते नहीं हैं। वो है हद की बात। कन्या की जब सगाई होती है तो फिर कितना खु(शी) होती है। वो है अल्प काल की खुशी। सुख तो ... नसीब। इस बेहद की सगाई

(अधूरी मुरली)